International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(I), January - March, 2022, pp.119-124

वर्तमान समय में विनियोग के बदलते प्रतिमानः म्यूचअल फंड के विशेष संदर्भ में

डॉ. विजयलक्ष्मी पारीक*

सार

''यह समाज जोखिम भरा समाज है।'' जोखिम से बचने के लिये म्यूचुअल फंड सही हैं। जन साधारण शब्दो में बहुत सारे लोगो से उधार लिये पैसे को म्यूचुअल फंड या साझा कोष कहते है। जिसका शाब्दिक अर्थ सामूहिक निवेश से होता है। म्यूचुअल फंड अंशो, ऋणपत्रों एवं अन्य प्रतिभूतियो का एक ऐसा संयोजन होता है जिसे बहुत बडी तादाद में निवेशक क्रय करते है। जिसका प्रबन्ध एक पेशेवर निवेशकर्ता द्वारा किया जाता है जो फण्ड के निवेश को निर्धारित कर होने वाले लाभ व हानि का पूरा ब्यौरा रखता है तथा इससे होने वाले लाभ–हानि का निवेशको मे बांट देता है वो निवेशक जिसको स्टॉक मार्केट की जानकारी ना हो निवेश हेतू म्यूचल फण्ड सीधा व सरल मार्ग है। प्रतिभूतियो के ऐसे प्रत्येक संयोजन को जिसकी अपनी एक विशिष्ट निधी उसे साझा कोष पारस्परिक निधियों या म्यूचुअल फंड कहा जाता है। म्यूचुअल फंड प्रबन्धक (कम्पनी) सभी निवेशको की निवेश राशि को इक्कट्ठा कर बाजार में निवेश करती है। जिसके लिये शुल्क भी लेता है। जिसे सुविधा शुल्क कहा जाता है। जिसके कारण निवेशक इस चिन्ता से मुक्त हो जाते है कि उन्हे कब शेयर क्रय और विक्रय करने है क्योकि यह कार्य फण्ड मैनेजर का होता हे जो निवेशक के फण्ड का रख–रखाव का भार उठाता है। इसके अन्तर्गत छोटे निवेशक को भी लाभ होता है इस शोध पत्र के अन्तर्गत म्यूचुअल फंड के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा करते हुए आम नागरिक के जीवन में इस प्रकार के विनियोग के द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने एवं अपने आर्थिक विकास की और एक मील के पत्थर की तर्ज पर इंगित किया गया है। इस शोध पत्र का उदेश्य वर्तमान समय में आर्थिक स्थिति में उच्च पायदान पर पहुंचने के लक्ष्य को ध्यान में रखकर छोट–छोटे विनियोग के द्वारा अपनी स्थिति में परिवर्तन का लक्ष्य अंकित किया जा सकता है।

शब्दकोश: *म्यूचुअल फंड, साझा कोष, संयोजन, प्रबन्धक, निवेशक, विनियोग।*

प्रस्तावना

सभी विकसित देशो की तरह भारत मे भी म्यूचुअल फंड में निवेश तेजी से बढ रहा है। इसके कई कारण है। म्यूचुअल फंड निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश का एक सस्ता और आसान तरीका प्रदान करते है। म्यूचुअल फंड के माध्यम से आम निवेशकों को विविधीकरण (Diversification) और वित्तीय नियंत्रण (Money Management) का फायदा आसानी से मिल जाता है। इस तरह की सुविधा पहले केवल उन ही लोगो को मिल पाती थी जिनके पास या तो बहुत सम्पत्ति होती थी या उन्हें पूंजी बाजार की तकनीकी जानकारी होती थी।

जन साधारण शब्दो में बहुत सारे लोगो से उधार लिये पैसे को म्यूचुअल फंड या साझा कोष कहते है। जिसका शाब्दिक अर्थ सामूहिक निवेश से होता है। म्यूचुअल फंड अंशो, ऋणपत्रों एवं अन्य प्रतिभूतियो का एक ऐसा संयोजन होता है जिसे बहुत बडी तादाद में निवेशक क्रय करते है। जिसका प्रबन्ध एक पेशेवर निवेशकर्ता द्वारा किया जाता है जो फण्ड के निवेश को निर्धारित कर होने वाले लाभ व हानि का पूरा ब्यौरा रखता है तथा इससे होने वाले लाभ–हानि का निवेशको मे बांट देता है वो निवेशक जिसको स्टॉक मार्केट की जानकारी ना हो निवेश हेतू म्यूचल फण्ड सीधा व सरल मार्ग है। प्रतिभूतियो के ऐसे प्रत्येक संयोजन को जिसकी अपनी एक विशिष्ट निधी उसे साझा कोष पारस्परिक निधियों या म्यूचुअल फंड कहा जाता है।

---

6 प्राचार्य, एस.एस.जी पारीक. स्नात्कोतर महिला महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

म्यूचुअल फंड प्रबन्धक (कम्पनी) सभी निवेशको की निवेश राशि को इक्कट्ठा कर बाजार में निवेश करती है। जिसके लिये शुल्क भी लेता है। जिसे सुविधा शुल्क कहा जाता है। जिसके कारण निवेशक इस चिन्ता से मुक्त हो जाते है कि उन्हे कब शेयर क्रय और विक्रय करने है क्योकि यह कार्य फण्ड मैनेजर का होता हे जो निवेशक के फण्ड का रख–रखाव का भार उठाता है। इसके अन्तर्गत छोटे निवेशक को भी लाभ होता है क्योकि वह बहुत ही छोटी राशि जैसे रु 100 प्रतिमाह भी निवेश कर सकता है जिसके लिये उन्हे सिस्टेमेटिक इनवेस्टमेन्ट प्लान लेना होगा और बैंक प्रतिमाह स्वतः ही राशि का स्थानान्तरण फण्ड मे कर देता है। म्यूचुअल फंड के शेयरो की कीमत को नेट एसेट वैल्यू (Net Asset Value-NAV) कहते हैं।

विश्व मे म्यूचुअल फंड का उद्‌गम लगभग 100 वर्ष पुराना ही है जबकि भारत में लगभग 50–60 वर्ष पहले का है। सर्वप्रथम 1963 में UTI की स्थापना के साथ इसका उद्‌गम हुआ है जिसमें 1987 में सार्वजनिक बैंको एवं बीमा कम्पनियों के लिये शुरू किया गया जिसके पश्चात् SBI द्वारा म्यूचुअल फंड की स्थापना की गई, 1993 में प्राइवेट सेक्टर के लिये भी म्यूचुअल फंड खोल दिया गया। UTI भारत का सबसे बडा संगठन है। इसकी स्थापना 1963 में की गई थी जिस पर सेबी का नियंत्रण होता हैं। वर्तमान में इसके अध्यक्ष लियोपुरी है।

म्यूचुअल फंड एक ऐसी कम्पनी है जो जनता में प्रतिभूतियों या ईकाईयॉ विक्रय कर करधन राशि एकत्र करता हैं। जिसे वह अलग–अलग प्रकार की कम्पनियों के शेयर, डिबेन्चर में निवेश करता है जिनका मूल्य बाजार में दैनिक आधार पर प्रचलित मूल्य पर निर्धारित किया जाता है। जिससे जोखिम कम हो जाती है।

भारत में प्रमुख रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के म्यूचुअल फंड निम्न हैं।

- SBI म्यूचुअल फंड
- Indian म्यूचुअल फंड
- PNB म्यूचुअल फंड
- BOI म्यूचुअल फंड
- LIC म्यूचुअल फंड
- GIC म्यूचुअल फंड
- सीमापारीय निधियॉ

म्यूचुअल फंड के मुख्य बिन्दु

- म्यूचुअल फंड के द्वारा छोटे निवेशको का बाजार के अनुरूप अतिरिक्त आय प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होते है।
- छोटी–छोटी बचतो को म्यूचुअल फंड गतिशील बनता है।
- जब सरकार को वित्त साधन जुटाने में कठनाई हो तो मुद्रा बाजार के लिये अतिरिक्त वित्त म्यूचुअल फंड द्वारा एकत्र किये जाते हैं।
- छोटे–छोटे निवेशक को मुद्रा बाजार में निवेश के अवसर प्रदान करता है।
- सरकारी व अर्द्ध सरकारी प्रतिभूतियों क्रय कर मुद्रा बाजार की ऋण आवश्यकता की पूर्ति करता है।
- मुद्रा बाजार को पर्याप्त तरलता उपलब्ध करना।

म्यूचुअल फंड के लक्षण

- म्यूचुअल फंड में एक निवेशकर्ता कम्पनी निवेशको होती है। प्राप्त धन को पूँजी बाजार में निवेश करता है।
- म्यूचुअल फंड का नियमन SEBI द्वारा किया जाता है।
- म्यूचुअल फंड का संचालन प्रयोजक कम्पनी द्वारा किया जाता है।
- म्यूचुअल फंड में निवेश के लिये फण्ड जुटाने के लिये स्वयं की प्रतिभूतियो (ईकाई) का विक्रय किया जाता है।
- म्यूचुअल फंड में अनगिनत प्रतिभूतियों में निवेश किया जाना सम्भव होता है। अतः कुछ प्रतिभूतियों के मूल्य गिर जाने पर शेष के मूल्यों में वृद्धि से लाभ प्राप्त होता है तो जोखिम कम हो जाता है।
- म्यूचुअल फंड में कम मूल्य की प्रतिभूतियो को बेचकर धन राशि प्राप्त की जा सकती है।

म्यूचुअल फंड के प्रकार

निवेशक को चाहिये कि वह विभिन्न प्रकार के म्यूचुअल फंड का विशलेषण कर अपने उद्देश्यों के आधार पर योजना का चुनाव करें जैसे इक्विटी योजना में इंडेक्स फण्ड, डायवर्सिफाइड फण्ड, लार्ज कैप फण्ड, मिड कैप स्कीम, टैक्स सेविंग स्कीम जैसे विकल्पों में से चुनाव कर सके।

- **सूचकांक योजना** – इन्डेक्स स्कीम में वह निवेशक जो किसी विशेष शेयर के काल नही चाहते है निवेश कर सकते है इसमें उन विशेष शेयरो में निवेश किया जाता है जिसमे इन्डेक्स उपर जाता है तो निवेशको को लाभ होता है।
- **डायवर्सिफाइ स्कीम** – विविध योजना में निवेशक किसी विशेष सेक्टर या इकोनॉमी के किसी एक सेगमेन्ट तक सीमित नही रहता इसमे अनेक विकल्प उपलब्ध होते है।
- **लार्ज कैप और मिड कैप** – इस स्कीम के अन्तर्गत छोटी–छोटी कम्पनियों में निवेश किया जाता है इसमें जोखिम अधिक होता है साथ ही अधिक रिर्टन देने वाली क्षमता भी होती है। शेयर मार्केट में लम्बी अवधि का निवेश लाभदायक होता है। कम अवधी निवेश में जोखिम भी अधिक होता है। लार्ज कैप म्यूचुअल फंड निवेश किसी ब्लूचिप कम्पनी के स्टॉक में किया जाता हैं।
- **बैलेन्स फण्ड या हाइब्रिड फण्ड** – इसका अर्थ होता है कॉमन स्टॉक, प्रैफर्ड स्टॉक बांड या अल्प अवधी बांड होता है। जो लाभदायक होने के साथ–साथ सुरक्षित भी होते है।
- **ओपेन एंडेड और क्लोज एंडेड फंड** – योजना ओपेन एण्डेड फण्ड के अन्तर्गत सम्पूर्ण जीवन काल में कभी भी यूनिट जारी किये जा सकते है या उनका भूगतान किया जा सकता है इसमें शेयर की तरह उतार–चढाव आते रहते हैं।

क्लोज एण्डेड फण्ड में बोनस या राइट निर्गमन छोडकर कोई भी नया यूनिट जारी नहीं किया जा सकता जिसमें उतार–चढाव भी नही होते तथा इसका सब्सक्रिप्शन एक ही बार लिया जा सकता हैं। रींडेपशन भी न्यूनतम समय सीमा के बाद ही होता है। जिसमें इसके अन्तर्गत तरलता कम हो जाती है।

- **ग्रोथ फण्ड–** ग्रोथ फण्ड में उन कम्पनियों में निवेश किया जाता है। जो बाजार में तेज गति से प्रगति करती है जिससे लाभ की मात्रा अधिक होती है तथा जोखिम भी अधिक होता है।
- **डिवेडेड फण्ड–** इस योजना के अन्तर्गत निवेशक को समय–समय पर कम्पनी द्वारा दिये जाने वाले डिविडेन्ड प्राप्त होते है जो नगद रूप से निवेशक के खाते में जमा हो जाती है।
- **वैल्थ फण्ड–** इस योजना में निवेश सुरक्षित रहता है और हानि की सम्भावना ना के मात्र ही होती है लेकिन लाभ की मात्रा भी कम ही होती है।
- **मनी मार्केट–** निवेश की गई पूंजी को सुरक्षित रखने हेतू इस फण्ड का उपयोग किया जाता हैं। यह सभी योजनाओं में सबसे सुरक्षित फण्ड होता है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले निवेशक को यह चुनना होता है कि किस प्रकार के फण्ड में निवेश करना चाहता है यदि वह इक्विटी फण्ड में निवेश करना चाहता है तो उसे ज्यादा जोखिम उठाने के लिये तैयार होना होगा तथा समयावधि में 5 वर्ष से कम ना हो।

यदि कोई निवेश मध्यम जोखिम उठाना चाहता है तो हाइब्रिड फण्ड और कम जोखिम उठाना चाहता है तो डेड फण्ड में निवेश कर सकता है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने पर जोखिम का तत्व सभी निवेश में होता है लेकिन कुछ बातो का ध्यान रखकर हम जोखिम को कम कर सकते है।

- फण्ड को चुनने से पूर्व एक निश्चित समय सीमा में उसके उतार–चढाव का विश्लेषण कर।
- जिस कम्पनी के माध्यम से निवेश करना चाहते है उसकी कार्य प्रणाली की क्षमता।
- जिस कम्पनी के साथ निवेश करना है वो क्या ज्यादा जोखिम के साथ–साथ छोटी कम्पनियों मे निवेश कर ज्यादा लाभ कमा रहा है अर्थात किस क्षेत्र में कितना निवेश जैसे इस्विटी में कितना और डेट में कितना।
- कम्पनी का एक्सपेन्स रेशो क्या है क्योकि एक्सपेन्स रेशो से आप जितना लाभ कमाते है उसका हिस्सा उनके लिये देते है जिससे लाभ की मात्रा कम हो जाती है।

म्यूचुअल फंड में निवेश की प्रकिया

- सबसे पहले म्युचुअल फंड में निवेश करने हेतू आपको अपनी पहचान के लिये झल्ब करनी होगी जिसके लिये निम्न दस्तावेज की आवश्यकता होगी।
  - आधार कार्ड
  - पेन कार्ड

Online KYC करने के पश्चात् निवेशक को म्यूचुअल फंड चुनने व भुगतान करने के लिये आवेदन करना होता है।

म्यूचुअल फंड में कोई भी निवेश कर सकता है। भारत में रहने वाला, NRI, कोई भी नाबालिक के माता–पिता बच्चे के नाम से निवेश कर खाते को मैनेज कर सकते है पाटर्नशिप कम्पनियों, LLP ट्रस्ट और कम्पनिया भी निवेश कर सकती हैं।

म्यूचुअल फंड के लाभ

- म्यूचुअल फंड मे निवेश करने पर ट्रेडिंग लागत कम आती है क्योकि बडी संख्या में लेन–देन करते है।
- म्यूचुअल फंड का प्रबन्ध पेशेवर योग्य प्रबन्धको द्वारा किया जाता है। जिससे जोखिम कम हो जाता हे।
- म्युचुअल फंड अच्छी तरह से विनियमित होते है क्योकि उन्हे एक निश्चित अवधी के पश्चात् अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करनी होती है। जिसमें निवेशक म्यूचुअल फंड स्कीम की परफोर्मेन्स को देख सके।
- लिक्विडिटी म्यूचुअल फंड के अन्तर्गत निवेशक अपनी सुविधानुसार फण्ड से अपना पैसा निकाल सकता है।
- म्यूचुअल फंड मे निवेश व्दसपदम उवकम पर अपनी सुविधानुसार फण्ड वितरको, फण्ड हाउस, दलालो और विभिन्न एजेन्सियों के माध्यम से कर सकते है।
- म्युचुअल फंड में निवेश करने हेतू ग्राहको से कोई शुल्क नही लिया जाता है।

म्यूचुअल फंड से हानियॉ

जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते है ठीक उसी प्रकार म्यूचुअल फंड में अनेक लाभ के साथ कुछ हानियॉ भी होती है, जो निम्नलिखित है–

- म्यूचुअल फंड में रिर्टन की गारन्टी नही होती है।
- क्लोज एंडेड और ई एल एस एस एक लोक इन अवधि होती हे। जिसके अन्तर्गत निवेशक आवश्यकता पडने पर अपने पेसो को भूना नही सकता।

म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय ध्यान देने योग्य बाते

- निवेश के उद्देश्य का वर्णन करे ताकि आवश्यकतानुसार योजना का चयन किया जा सके।
- निवेश की रेंटिंग का विश्लेषण करे जिसमें म्यूचुअल फंड के पिछले प्रदर्शन व अगले चरण ए.यू.एम की संरचना फण्ड की आयु निकास, भार आदि बातो का ध्यान रखना होगा।
- ए. एम. सी. अनुसंधान – इसके अन्तर्गत फण्ड मैनेजर की साख की जांच करनी होती हे क्योकि यही व्यक्ति म्यूचुअल फंडयोजना का प्रबन्ध करता है।
- अपने निवेश की निगरानी करे ताकि आवश्यक होने पर वे अधिकतम लाभ अर्जित करने के लिये अपने पोर्टफोलियो का पुनः सन्तुलित कर सके।

म्यूचुअल फंड का गठन

म्यूचुअल फंड का गठन एक ट्रस्ट के रूप स्पांसर, ट्रस्टी एसेस मैनेजमेन्ट कंपनी को कम्टोडियन के अधीन होता है। प्रमोटरों एवं प्रायोजको इसके ट्रस्ट की स्थापना करते है जो सेवी द्वारा मान्यता प्राप्त एसेट मैनेजमेन्ट कम्पनी की विभिन्न सिक्यूरिटी में पूंजी निवेश कर धन का प्रशासन भी करती है। सेबी द्वारा मान्यता प्राप्त कस्टेडियन विधित्व स्कीमों की सिक्यूरिटी को अपने अधीन रख कर उसकी देखरेख और नियन्त्रण का कार्य भी ट्रस्टियो द्वारा की जाती है इसमें 2/3 सदस्य स्वतंत्र होते है। 50ः डायरेक्टर भी स्वतंत्र होते है। सभी ट्रस्टीयो को म्यूचुअल फंड में कोई भी स्कीम खोलने के लिये सेबी में रजिस्ट्रेशन करवाना है।

भारत में म्यूचुअल फंड निवेश में बिचौलियो की भूमिका नगण्य करने हेतू एक ट्रेडिंग प्लेटफार्म तैयार किया गया है जिससे सीधे ही म्यूचुअल फंड यूनिट सीधे ही खरीदे–बेचे जा सकते है।

भारत में कोई भी फण्ड हाउस जब कोई नई योजना को लान्च करता है तो इससे जुडे सम्पूर्ण विवरण जैसे (नियम, शर्ते, इन्वेशमेन्ट का उद्देश्य) जोखिम कारक, लोड व अन्य व्यय आदि से जुडी पर्याप्त जानकारी सेबी को देनी होती है। जिसे स्कीम का ऑफर डाक्यूमेन्ट कहा जाता है जिसमें यह भी लिखा होता है कि निवेशक को कौन –कौन से शुल्क वहन करने है।

म्यूचुअल फंड और शेयर के बीच अन्तर

जब कोई निवेशक निवेश करना चाहता है तो उसके पास दो विकल्प होते है कि शेयर में निवेश करे या म्यूचुअल फंड में । अतः दोनो को अलग– अलग जानकारी निवेशक को होनी चाहिये जो निम्न है–

- **विविधता** :– म्यूचुअल फंड में विभिन्न योजनाओ में निवेश की जा सकती है जबकि शेयरों मे प्रत्यक्ष रूप से निवेश किसी भी विविधीकरण के लिये नेतृत्व नही कर सकते।
- **प्रबन्धन** :– म्यूचुअल फंड में एक बार निवेश करने के पश्चात् प्रबन्ध अनुभवी मैनेजरों द्वारा किया जाता है। शेयर में निवेश करने हेतू स्वयं ही शेयर की कीमत, आवाजाही व उतार–चढाव पर नजर रखते हुये प्रबन्धन करना होता है।
- **कर देयता** :– म्यूचुअल फंड में कुछ निवेश जैसे इक्विडिटी ओरिएडेंड म्यूचुअल फंड में IT की धारा 80ब में फाइनेंसियल वर्ष में 1.50 लाख रू की छूट की अनुमती होती है। जबकि शेयर में इस प्रकार की कोई टैक्स छूट का प्रावधान नहीं हैं।
- **जोखिम** :– म्यूचुअल फंड जोखिम का तत्व कम होता है जबकि शेयर में जोखिम ज्यादा रहती है।
- **एस आई पी (सिस्टमेटीक इनवेस्टमेन्ट प्लान)** :– म्यूचुअल फंड में व्यवस्थित निवेश योजना के माध्यम से निवेश कर सकते है जो नियमित रूप से निश्चित राशि निवेश करने की अनुमती देता है। जबकि शेयरो में निवेश करने पर व्यवस्थित निवेश योजना जैसे कोई विकल्प नही होता है।
- **लचीलापन** :– म्यूचुअल फंड में प्रबन्धक ही इसको मैनेज करते हे जिसे स्वयं यह तय नही कर सकते कि किस प्रतिभूतियों मे निवेश करना है। जबकि शेयरो में स्वयं की पसन्द से निवेशक शेयर खरीद व बेच सकते है।
- **नियन्त्रण** :– म्यूचुअल फंड निवेश में प्रबन्धक ही तय करता है किस प्रकार की प्रतिभूतियों में निवेश करना है अर्थात निवेशक का नियन्त्रण नही होता जबकि शेयरो मे निवेशक को अधिक नियन्त्रण मिलता है क्या और कब खरीदना है या बेचना है। निवेशक स्वयं ही तय करता है। अर्थात् नियंत्रण अधिक होता हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतय यह कह सकते है कि निवेशक अपनी आवश्यकता के अनुसार उत्पाद को चुन सकता है। म्यूचुअल फंड उन निवेशको के लिये अच्छा माना जावेगा जिनके पास निवेश का प्रबन्ध करने का विशेषज्ञता या समय का अभाव रहता है।

शेयर में निवेश करना उन निवेशको के लिये उपयुक्त रहता हे जो स्टॉक चुन सकते है और विविध पोर्टफोलियों बनाते है तो शेयर में निवेश उपयुक्त माना जाता है।

भारत के विगत 5 साल में सबसे अधिक रिर्टन देने वाले म्यूचुअल फंड

- एक्सिम ब्लू चिप या लार्ज कैम :– विगत 5 वर्षो में लगभग 23.45 वार्षिक आधार पर रिर्टन देने वाला यह फण्ड बडी कम्पनियों में निवेश करता है इसकी शुरूआत रु 1000 SIP से कर सकते है।
- कैनरा बैंक ब्लू चिप इक्विटी फण्ड :– विगत 5 वर्षो में 22.14 प्रतिशत की दर से रिर्टन दिया है कैनरा बैंक म्यूचुअल फंड की स्थापना 8 वर्ष पूर्व ही हुई थी।
- PGIM India mid cap आप्पूचनिटेज :– विगत 5 वर्षो में SIP 33.21 प्रतिशत रिर्टन दिया है।
- एक्सिस मिड कैप :– विगत 5 वर्षो में इसने 26.27 प्रतिशत रिर्टन दिया है यह अधिक ग्रोथ रखने वाली कम्पनियों में निवेश करता है।
- नियॉन इण्डिया स्माल कैप फण्ड :– विगत 3 वर्षो में 28.22 प्रतिशत रिर्टन दिया है अगर निवेशक थोडा रिस्क उठाने को तैयार है तो इसमे निवेश कर सकती है।

वर्ष 2021 के Best Large – Mid Cap Mutual Funds to Invest in 2021

- Mirae Asset Emerging Bluechip Fund.
- Sundaram Large and Midcap Fund.
- Invesco India Growth Opportunities Fund.
- Canara Robeco Emerging Equities Fund.
- Principal Emerging Bluechip Fund.
- LIC MF Large and Midcap Fund.

Retirement 5 Mutual Fund

- TATA Retirement Seving Programming Plan
- TATA Retirement Modrate Seving Plan
- Senior Citizens' Saving Scheme (SCSS)
- Pradhan Mantri Vaya Vandana Yojana (PMVVY)
- Equity mutual funds

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर बी आई (2017), फाइनेंन्सियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट. साधक, एच.(2003)
2. म्यूचुअल फण्ड इन इंडिया–मार्केटिंग स्टेटीजी एण्ड इनवेस्टमेन्ट प्रक्टिस, सेबी (2014)
3. एनुअल रिर्पोट 2016–2017. सेबी (2019)
4. एनुअल रिर्पोट 2018–2019. सेबी (2019)
5. जे. एस. एण्ड जैन, एस (2005) ''परफोर्मेंस एवुलेशन ऑफ म्यूचुअल फंड'', पंजाब जनरल ऑफ बिजनेस स्टडीज, (Vol.1, No.1, pp.102-110.)
6. सिंह, वाई.पी. एण्ड वनिता (2002), ''म्यूचुअल फंड इन्वेस्टर प्रीस्पेक्शन एण्ड परफोर्मेंस : ए सर्वे'', द इण्डियन जनरल ऑफ कॉमर्स,
7. सुडालामुट्ठु, एस एण्ड कुमार, पी.एस (2008), ''ए स्टडी ऑन इन्वेस्टर्स प्रीस्पेक्शन टूवार्डस म्युचुअल फंड इन्वेस्टमेन्ट्स'' मैनेजमेन्ट ट्रेड (Vol.5, No.1, P-106)

❖◆❖